संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X
Peer Reviewed Journal
Impact Factor 3.471

शोध दिशा

49

Research Journal is indexed in the
International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) database.

International
Innovative Journal
Impact Factor (IIJIF)

(2)

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका
पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

शोध अंक 49 जून-सितंबर 2020 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वेब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ॰ मीना अग्रवाल
बी-203, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन॰सी॰आर॰
डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ॰ रश्मि त्रिवेदी

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार 09557746346

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

ॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

ाबाद) उ॰प्र॰
ुकेशनल इंस्टीट्यूट,

ग्वविद्यालय, मीरपुर,

जयपुर (राज॰)
वक्रम विश्वविद्यालय,

. अलीगढ़ (उ॰प्र॰)
ला वि। पीठ, पुणे

ISSN 0975-735X

अनुक्रम

संस्कृत का महत्त्व : संस्कृत विश्वविद्यालयों की स्थापना/ **डॉ॰ रमेश पोखरियाल 'निशंक'** 27

21वीं सदी के उपन्यासों का पर्यावरणी परिदृश्य एवं परिप्रेक्ष्य/ **प्रो॰ अर्जुन चव्हाण** 30

आओ हिंदी-हिंदी खेलें/ **डॉ॰ एम॰एल॰ गुप्ता 'आदित्य'** 41

प्रेमचंद का भाषा-चिंतन : सुझावों की नोटिस नहीं ली गई/ **प्रो॰ अमरनाथ** 46

हिंदी बालपत्रकारिता का सफरनामा/ **डॉ॰ सुरेंद्र विक्रम** 51

गीतकार पुष्पेंद्र वर्णवाल की प्रेमकाव्य कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन/ **जयप्रकाश सिंह, डॉ॰ महेश 'दिवाकर'** 64

गुरु जंभेश्वर वाणी में रहस्यवाद : एक तथ्यात्मक दृष्टिकोण/ **परवीन कुमारी** 75

धूमिल की लंबी कविता 'पटकथा'/ **आर॰ रमेशकुमार, डॉ॰ ल॰ तिल्लै सेल्वी** 82

'शब्द-कलश' में संवेदना के विविध स्वर/ **संतोषकुमार, डॉ॰ महेश 'दिवाकर'** 92

अपने ही चरित्र के आईने में नारी का संघर्ष/ **देवी नागरानी** 101

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी-समस्याएँ/ **त॰ नागपलनीवेल, डॉ॰ त॰ तिल्लैचेल्वी** 106

काशीनाथ सिंह कविता की नई तारीख : एक मूल्यांकन/ **डॉ॰ ओमप्रकाश** 114

शमशेरबहादुर सिंह की कविताओं में ऐंद्रिक बोध/ **डॉ॰ रामस्वरूप कुमार** 121

शमशेरबहादुर सिंह की कविताओं में देशभक्ति का संदर्भ/ **डॉ॰ रामस्वरूप कुमार** 130

विषयवस्तु एवं शिल्प की दृष्टि से आदर्शोन्मुख यथार्थवाद : कथासम्राट मुंशी प्रेमचंद/ **डॉ॰ रविकांत 'रवि'** 137

'कालिदास-दर्शन' का उत्कृष्ट निदर्शन-'राजा प्रकृतिरंजनात्'/ **डॉ॰ रजनीशकुमार पाठक** 145

दलित कहानी और कहानीकार : एक परख/ **डॉ॰ ओमप्रकाश** 149

मन्नू भंडारी और उनका साहित्य : एक परिचय/ **डॉ॰ मिनाक्षी** 155

कालिदास और वनस्पतिगत पर्यावरण/ **डॉ॰ अवधेशकुमार** 159

सुरेंद्र वर्मा के उपन्यास परंपरा और आधुनिकता/ **रोहिणी सुरेश कुलकर्णी, डॉ॰ मंजूर चाँदभाई सैयद** 165

कनुप्रिया : राधा की विह्वलता का दर्पण/ **रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'** 169

हमारी संस्कृति में पर्यावरण-संरक्षण की भूमिका/ **डॉ॰ नीतूसिंह** 177

डॉ॰ कैलाश वाजपेयी के काव्य में पर्यावरणीय चेतना/ **डॉ॰ भावना देवी** 182

काशीनाथ सिंह कविता की नई तारीख : एक मूल्यांकन

डॉ॰ ओमप्रकाश (डी॰ लिट्)
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
आर॰के॰एस॰डी॰ कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

काशीनाथसिंह अत्यंत लोकप्रिय कहानीकार हैं। 'कविता की नई तारीख' उनकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कहानी है। काशीनाथसिंह की कहानी-कला, यथार्थ की उनकी समझ, परिस्थितियों और चरित्रों के मध्य संबंध द्वंद्व और चरित्रों के आपसी द्वंद्व को समझने की मेधा का परिचय इस कहानी में मिलता है। आधुनिक पूँजीवाद व्यक्ति को क्रमशः अपनी जड़ों और अपनी जमीन से, अपने जीवन के मूलभूत सामाजिक और संवेदनात्मक आधार से विलग कर रहा है। यह कहानी बहुत ही संवेदनशीलता के साथ इस अलगाव की प्रक्रिया को प्रकट करती है। काशीनाथसिंह द्वारा रचित कहानी 'कविता की नई तारीख' आलोचना के विविध आयाम खोलती है। कहानी दो परिवार जो आपस में निकट संबंधी हैं के बीच संबंधों को दर्शाती है। 'कविता की नई तारीख' कहानी विषय-वस्तु की दृष्टि से नई है। पूरी कहानी नायक कवि और प्रतिनायक सानू जो उसका साढ़ू भाई है की बातचीत पर आधारित है। यह सामान्य-सी बातचीत अनेक परतें खोलती है। कहानीकार ने बीच-बीच में नारी मनोविज्ञान का भी सूक्ष्म चित्रण किया है। कहानी में ऐसे अनेक अवसर है जहाँ नायक कवि की पत्नी उसे यह घिसी-पिटी नौकरी छोड़ने के लिए प्रेरित करती है, जहाँ ऊपर से कोई आमदन नहीं है। ऐसा सुखी जीवन की लालसा के लिए ही है। पेशे से अध्यापक और सामाजिक जीवन में कवि, कवि अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ जीवन में आई एकरसता को मिटाने के लिए रेलगाड़ी से मौज-मस्ती के लिए यूँ कहें कि हवा-पानी बदलने के लिए अपने साढ़ू भाई के घर जाता है। सानू को बहुत खुशी है, जिस कारण वह अपने मित्रों के साथ उन्हें लिवाने स्वयं स्टेशन जाता है, लेकिन उसे तब धक्का लगा जब वह देखता है कि वे साधारण टिकट से आए हैं, क्योंकि ऐसा उसके स्टेटस के खिलाफ है। इसका अहसास कवि को भी है यही कारण है कि वह स्टेशन पर उतरते ही अपना सारा सामान उठाकर प्रथम श्रेणी के डिब्बे के सामने जाकर खड़ा हो जाता है। घर पहुँचने पर मौसेरे भाई-बहनों के बीच कुछ तुनक-मिजाजी जरूर हुई। ऐसा वातावरण, शिक्षा और संस्कारों की भिन्नता के कारण होना स्वाभाविक भी था, किंतु सानू और रेखा ने किसी प्रकार की कोफ्त नहीं दिखाई बल्कि अनपेक्षित सम्मान किया। महानगरीय संस्कृति में जब मानवीय मूल्यों में गिरावट दर्ज की गई हो कहानीकार ने विपरीत परिस्थिति बोध दर्शाया है अर्थात कवि का पत्नी और बच्चों सहित साढ़ू से मिलने आना उन्हें कहीं भी अखरता नहीं। बेशक कवि अपने साढ़ू भाई की शानों-शौकत और बच्चों के एडिकेट्स देखकर चकित अवश्य है। यही कुछ कारण हैं जो 'कविता की नई तारीख' कहानी को कहानियों की कतार में अलग खड़ा करती है। आमतौर पर बच्चे पढ़-लिखकर महानगरों में नौकरी के लिए निकल जाते हैं। महानगरों की भागदौड़-भरी षिंदगी में संबंधों की आत्मीयता नहीं रह

ISSN 0975-735X

पूर्णत: चरितार्थ होते हैं। कवि यदि 'छाया' सुख का क्षणिक आनंद अनुभव करता है तो पूरा परिवार 'धूप' अभाव में जीता है। सानू यदि 'छाया' सुख में है तो उसके परिजन पिता, माँ, भाई आदि वापिस गाँव की 'धूप' में ही लौट जाते हैं। यही 'किस्मत का खेल' है जिसकी धुरी पर दोनों परिवार झूलते हैं। इन्हीं दो सार्थक वाक्यों से कहानी का ताना-बाना बुना गया है। कथा नायक कवि के ऊपर इतने मानसिक आघात हुए हैं कि उसे अपना कवि जीवन ही अभिशाप लगने लगा है। वह कविता रचने की नई तारीख के विषय में सोचने पर मजबूर हो जाता है कि कविता लिखकर अभाव का जीवन जीए या फिर पत्नी ने जैसा कहानी के आरंभ में कहा था, 'आप यह नौकरी छोड़ क्यों नहीं देते?' ऐसा करके वह परिवार को ज्यादा सुखी बनाए। अत: कहानी का शीर्षक स्वत: प्रमाणित हो जाता है।

संदर्भ

1. खरोंच, काशीनाथसिंह, चयन संपादन : आशीष त्रिपाठी, साहित्य भंडार, इलाहाबाद-211003, पृ॰ 29
2. वही, पृ॰ 30
3. वही, पृ॰ 57
4. वही, पृ॰ 57
5. वही, पृ॰ 53
6. वही, पृ॰ 48
7. वही, पृ॰ 41
8. वही, पृ॰ 46
9. वही, पृ॰ 50
10. वही, पृ॰ 50-51
11. वही, पृ॰ 51
12. वही, पृ॰ 61
13. वही, पृ॰ 52-53
14. वही, पृ॰ 56

ISSN 0975-735X